समाजशास्त्र

अतिलघु उत्तरीय प्रश्न

प्रश्न 1. जनसांख्यिकी से आप क्या समझते हैं?

उत्तर- जनसांख्यिकी (Demography) जनसंख्या का सुव्यवस्थित अध्ययन है। हिंदी में इसे 'जनांकिकी' भी कहा जाता है। इसका अंग्रेजी पर्याय 'डेमोग्राफी' यूनानी भाषा के दो शब्दों 'डेमोस' (demos) यानी जन (लोग) और 'ग्राफीन' (graphien) यानी वर्णन से मिलकर बना है, जिसका तात्पर्य है-लोगों का वर्णन।

प्रश्न 2. सबसे पहली आधुनिक किस्म की जनगणना सर्वप्रथम कब और कहाँ की गई?

उत्तर- संभवतः सबसे पहली आधुनिक किस्म की जनगणना अमेरिका की सन् 1790 की जनगणना थी और इस पद्धति को यूरोप में भी 19वीं शताब्दी के प्रारंभिक वर्षों में अपनाया गया।

प्रश्न 3. माल्थस का जनसंख्या वृद्धि का सिद्धांत क्या है?

उत्तर- माल्थस का जनसंख्या सिद्धान्त जनसंख्या में वृद्धि तथा खाद्यान्न आपूर्ति के मध्य संबंध की व्याख्या करता है। माल्थस ने 1798 में जनसंख्या के सिद्धान्त पर एक लेख (An Essay on the Principle of Population, 1798) में अपने जनसंख्या संबंधी सिद्धान्त का प्रतिपादन किया। इस सिद्धान्त का कथन है, "जनसंख्या में जीवन निर्वाह साधनों की अपेक्षा तीव्र गति से बढ़ने की प्रवृत्ति होती है। अतः यह सिद्धान्त. स्पष्ट करता है कि खाद्यपूर्ति की अपेक्षा जनसंख्या में अधिक तेजी से वृद्धि होती है और यदि इस जनसंख्या वृद्धि को रोका न गया तो परिणामस्वरूप दुराचार या विपत्ति उत्पन्न हो जाती है।

प्रश्न 4. जनसांख्यिकीय संक्रमण का सिद्धांत से क्या तात्पर्य है?

उत्तर- जनसांख्यिकीय संक्रमण का सिद्धांत का तात्पर्य यह है कि जनसंख्या वृद्धि आर्थिक विकास के समग्र स्तरों से जुड़ी होती है एवं प्रत्येक समाज विकास से संबंधित जनसंख्या वृद्धि के एक निश्चित स्वरूप का अनुसरण करता है।

प्रश्न 5. जनसंख्या संवृद्धि दर का तात्पर्य बताइए।

अथवा

जनसंख्या वृद्धि से क्या तात्पर्य है? [2020]

उत्तर- प्राकृतिक वृद्धि दर या जनसंख्या संवद्धि दर का तात्पर्य है-जन्म दर और मृत्यु दर के बीच का अंतर। जब यह अंतर शून्य (अथवा व्यावहारिक रूप से बहत कम. नगण्य) होता है तब यह कहा जा सकता है कि जनसंख्या 'स्थिर' हो गई है या वह 'प्रतिस्थापन स्तर पर पहुँच गई है। यह एक ऐसी अवस्था हाता ह जब जितने बूढ़े लोग मरते हैं उनका खाली स्थान भरने के लिए उतने ही नए बच्चे पैदा हो जाते हैं। कभी-कभी कुछ समाजों को ऋणात्मक संवृद्धि दर की स्थिति से भी गुजरना होता है, अर्थात् उनका प्रजनन शक्ति स्तर प्रतिस्थापन दर से नीचा रहता है। उदाहरणस्वरूप आज विश्व में कई ऐसे देश और क्षेत्र है जहा ऐसी स्थिति है; जैसे-जापान, रूस, इटली एवं पूर्वी यूरोप आदि।

अतः जनसंख्या वद्धि दो समय बिन्दओं के बीच किसी क्षेत्र विशेष में रहने वाले लोगों का सख्या म पारमा को कहते हैं। इसकी दर को प्रतिशत में अभिव्यक्त किया जाता है।

प्रश्न 6. 1911 से 1921 के बीच भारत में संवृद्धि की दर के नकारात्मक रहने का क्या कारण है?

उत्तर- 1911 से 1921 के बीच संवद्धि की दर नकारात्मक यानी ऋणात्मक रूप से -0.03% रहा। इसका कारण 1918-19 के दौरान इंफ्लुएंजा महामारी का भीषण तांडव था जिसने लगभग 1.25 करोड़ लोगों यानी देश की कुल जनसंख्या के 5% अंश को मौत के मुँह में ढकेल दिया था।

प्रश्न 7. राष्ट्रीय परिवार नियोजन कार्यक्रम के उद्देश्य बताइए।

उत्तर- भारत 1952 में अपनी जनसंख्या नीति की स्पष्ट घोषणा करने वाला संभवत: दुनिया का पहला देश था। इसकी जनसंख्या नीति ने राष्ट्रीय परिवार नियोजन कार्यक्रम के रूप में एक ठोस रूप धारण किया। मोटे तौर पर इस कार्यक्रम के उद्देश्य हैं-जनसंख्या संवृद्धि की दर और स्वरूप को प्रभावित करके सामाजिक दृष्टि से वांछनीय दिशा की ओर ले जाने का प्रयत्न करना। प्रारंभिक दिनों में, इस कार्यक्रम का सबसे महत्त्वपूर्ण उद्देश्य था-जन्म नियंत्रण के विभिन्न उपायों के माध्यम से जनसंख्या संवृद्धि की दर को धीमा करना, जन-स्वास्थ्य के मानक स्तरों में सुधार करना और जनसंख्या तथा स्वास्थ्य संबंधी मुद्दों के बारे में आम लोगों की जागरूकता बढ़ाना।

प्रश्न 8.. वंध्यकरण का क्या अर्थ है?

उत्तर- वंध्यकरण (sterilisation) का अर्थ ऐसी चिकित्सा पद्धतियों से है जिनके द्वारा गर्भाधान और शिशु-जन्म को रोका जा सकता है। पुरुषों के मामले में उपयोग में लाई जाने वाली शल्य पद्धति को नसबंदी (vasectomy) और स्त्रियों के लिए काम में लाई जाने वाली शल्य पद्धति को नलिकाबंदी (tubectomy) कहा जाता है।

प्रश्न 9. 2011 की जनगणनानुसार भारत की नगरीय और ग्रामीण जनसंख्या कितनी है? [2020]

उत्तर- 2011 की जनगणनानुसार शहरी जनसंख्या 377.11 मिलियन (31.6%) और ग्रामीण जनसंख्या 833.08 मिलियन (68.84%) है।

प्रश्न 10. सी० राइट मिल्स कौन थे?

उत्तर- सी० राइट मिल्स एक अमेरिकी समाजशास्त्री थे। वह वर्ष 1946 से वर्ष 1962 तक कोलम्बिया विश्वविद्यालय (यूएसए) में समाजशास्त्र के प्राध्यापक थे। उन्हें समाजशास्त्र के 'अभिजात्य सिद्धान्त' के लिए जाना जाता है। उनकी प्रसिद्ध रचना 'पावर इलिट' है जिसमें 'वर्गीय असन्तोष' की समाजशास्त्रीय व्याख्या की गई है।

प्रश्न 11. धार्मिक तथा जतिगत समुदायों के सृजन का श्रेय किसे प्राप्त है?

उत्तर- धार्मिक तथा जातिगत समुदायों के सृजन का श्रेय औपनिवेशिक ताकतों को प्राप्त है। उपनिवेशवाद ने धर्म और जाति को केन्द्रीयता प्रदान करने वाली संस्थाओं को प्रोत्साहित किया।

प्रश्न 12. जाति क्या है? [2020]

उत्तर- जाति एक व्यापक शब्द है जो किसी भी चीज के प्रकार या वंश-किस्म (स्पीशीज) को संबोधित करने के लिए इस्तेमाल किया जा सकता है। इसमें अचेतन वस्तुओं से लेकर पेड़-पौधों, जीव-जंतु और मनुष्य भी शामिल होते हैं। माना जाता है कि अंग्रेजी के शब्द कास्ट (caste) की उत्पत्ति पुर्तगाली मूल के शब्द कास्टा (casta) से हुई है। पुर्तगाली कास्टा का अर्थ है-विशुद्ध नस्ल। अंग्रेजी शब्द कास्ट का अर्थ एक विस्तृत संस्थागत व्यवस्था से है जिसे भारतीय भाषाओं में (प्राचीन संस्कृत भाषा से प्रारंभ करते हुए) दो विभिन्न शब्दों-वर्ण और जाति-के अर्थ में उपयोग किया जाता है।

प्रश्न 13. वर्ण से आप क्या समझते हैं?

उत्तर- वर्ण का शाब्दिक अर्थ 'रंग' है। समाज के ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र-- इन चार श्रेणियों के विभाजन को वर्ण कहा जाता है। हालाँकि इस विभाजन में जनसंख्या का एक महत्त्वपूर्ण भाग शामिल नहीं है जो कि 'जाति बहिष्कृत', विदेशियों, दासों, युद्धों में पराजित लोगों एवं अन्य लोगों से मिलकर बना है। इन्हें कभी-कभी 'पंचम' या पाँचवीं श्रेणी भी कहा जाता है।

प्रश्न 14. सत्यशोधक समाज की स्थापना किसने की?

उत्तर- ज्योतिराव गोविन्दराव फुले ने 1873 ई० में सत्यशोधक समाज की स्थापना की। यह संगठन निम्न जाति के लोगों के मानवाधिकारों और सामाजिक न्याय की प्राप्ति के लिए समर्पित था। फुले ने जाति-व्यवस्था के अन्याय की भर्त्सना की और छुआछूत के नियमों की घोर निंदा की।

प्रश्न 15. भारत में जनजातियों की किन्हीं तीन विशेषताओं का उल्लेख कीजिए। [2020]

उत्तर- भारत में जनजातियों की तीन विशेषताएँ अनलिखित हैं--

1. सामान्य भू-भाग-- एक जनजाति एक निश्चित भू-भाग में ही निवास करती है।

2. विस्तृत आकार-- एक जनजाति में कई परिवारों, वंश और गोत्र का संकलन होता है।

3. सामान्य भाषा-- एक जनजाति के लोग अपने विचारों का आदान-प्रदान करने के लिए जनजाति की अपनी एक सामान्य भाषा का प्रयोग करते हैं।

प्रश्न 16. 1901 ई० में कराई गई जनगणना को महत्त्वपूर्ण क्यों माना जाता है?

उत्तर- 1901 में हरबर्ट रिजले के निर्देशन में कराई गई जनगणना विशेष रूप से महत्त्वपूर्ण थी क्योंकि इस जनगणना के अंतर्गत जाति के सामाजिक अधिक्रम के बारे में जानकारी एकत्रित करने का प्रयत्न किया गया अर्थात् किस क्षेत्र में किस जाति को अन्य जातियों की तुलना में सामाजिक दृष्टि से कितना ऊँचा या नीचा स्थान प्राप्त है और तदनुसार श्रेणीक्रम में प्रत्येक जाति की स्थिति निर्धारित कर दी गई।

प्रश्न 17. 'अनुसूचित जनजातियाँ' और 'अनुसूचित जातियाँ' शब्द अस्तित्व में कैसे आए?

उत्तर- औपनिवेशिक काल के अंतिम दौर में, प्रशासन ने पददलित जातियों, जिन्हें उन दिनों 'दलित वर्ग' कहा जाता था, के कल्याण में रुचि ली। इन प्रयासों के तहत ही 1935 का भारत सरकार अधिनियम पारित किया गया जिसने राज्य द्वारा विशेष व्यवहार के लिए निर्धारित. जातियों तथा जनजातियों की सूचियों या 'अनुसूचियों' को वैध मान्यता प्रदान की। इस प्रकार, अनुसूचित जनजातियाँ' और 'अनुसूचित जातियाँ' शब्द अस्तित्व में आए। जातीय अधिक्रम में जो जातियाँ सबसे नीचे थीं, जिनके साथ सबसे अधिक भेदभाव बरता जाता था और जिनमें सभी तथाकथित 'अस्पृश्य' यानी अछूत जातियाँ शामिल थीं, उन्हें अनुसूचित जातियों की श्रेणी में शामिल किया गया।

प्रश्न 18. 'संस्कृतीकरण' से आप क्या समझते हैं?

उत्तर- 'संस्कृतीकरण' एक ऐसी प्रक्रिया का नाम है जिसके द्वारा (आमतौर पर मध्य या निम्न) जाति के सदस्य किसी उच्च जाति (या जातियों) की धार्मिक क्रियाओं, घरेलू या सामाजिक परिपाटियों को अपनाकर अपनी सामाजिक प्रस्थिति को ऊँचा करने का प्रयास करते हैं। यद्यपि यह प्रघटना बहुत पुरानी है और स्वतंत्रता प्राप्ति, यहाँ तक कि औपनिवेशिक काल के भी पहले से अपनाई जाती रही है, लेकिन हाल के समय में इसका बहुत अधिक प्रचार हो गया है। इस प्रक्रिया के अंतर्गत समानुकरण के लिए अक्सर ब्राह्मण या क्षत्रिय जातियों के रीति-रिवाजों या परिपाटियों को अपनाया जाता था; जैसे-शाकाहारी बन जाना, यज्ञोपवीत धारण करना, कुछ विशेष प्रकार की प्रार्थनाएँ करना और धार्मिक उत्सव मनाना इत्यादि। संस्कृतिकरण की प्रक्रिया आमतौर पर संबंधित जाति के आर्थिक स्तर में उन्नति होने के बाद या उसके साथ-साथ अपनाई जाती है, यद्यपि यह स्वतंत्र रूप से भी अपनाई जा सकती है।

प्रश्न 19. वर्ग से आप क्या समझते हैं? , [2020]

उत्तर- वर्ग अर्जित प्रस्थिति पर आधारित होता है। वर्ग का मुख्य आधार आर्थिक है। व्यक्ति अपनी योग्यता, शिक्षा, ज्ञान आदि के द्वारा वर्ग में अपनी स्थिति को उच्च कर सकता है। वर्ग को मुख्यतः तीन भागों में विभक्त किया जा सकता है—

(1) निम्न वर्ग, (2) मध्यम वर्ग तथा (3) उच्च वर्ग।

प्रश्न 20. जनजाति से क्या अभिप्राय है?

उत्तर- जनजाति एक आधुनिक शब्द है जो ऐसे समुदायों के लिए प्रयुक्त होता है जो बहुत पुराने हैं और उप-महाद्वीप के सबसे पुराने निवासी हैं। भारत में जनजातियों की परिभाषा नकारात्मक शब्दों में

अर्थात् वे क्या नहीं हैं, यह बताकर की जाती है। जनजातियाँ ऐसे समुदाय थे जो किसी लिखित-धर्मग्रंथ के अनुसार किसी धर्म का पालन नहीं करते थे, उनका कोई सामान्य प्रकार का राज्य या राजनीतिक संगठन नहीं था, उनके समुदाय कठोर रूप में वर्गों में नहीं बँटे हुए थे, और सबसे महत्त्वपूर्ण बात यह थी कि उनमें जाति जैसी कोई व्यवस्था नहीं थी, न वे हिन्दू थे और न ही किसान। 'जनजाति' शब्द का प्रयोग औपनिवेशिक युग में प्रारंभ किया गया था। समुदायों के एक अत्यंत विषम समुच्चय के लिए एक अकेले शब्द का प्रयोग मुख्य रूप से प्रशासनिक सुविधा की दृष्टि से ही किया गया था।

प्रश्न 21. मूल एवं विस्तारित परिवारों के विषय में समझाइए।

अथवा

विस्तारित परिवार से आप क्या समझते हैं? 2020

उत्तर- मूल परिवार में माता-पिता (दंपती) और उनके बच्चे सम्मिलित होते हैं। विस्तृत परिवार (जिसे आमतौर पर 'संयुक्त परिवार' कहा जाता है) के भिन्न-भिन्न रूप हो सकते हैं, लेकिन उनमें एक से अधिक युगल (दंपती) होते हैं और अक्सर दो से अधिक पीढ़ियों के लोग एकसाथ रहते हैं। इसमें कई भाई भी हो सकते हैं जो अपने-अपने परिवारों को लेकर संयुक्त परिवार के सदस्य के रूप में रहते हैं या एक बुजुर्ग दंपती जो अपने बेटों, पोतों, उनके परिवारों के साथ रहते हों। विस्तृत परिवार प्रायः भारतीय होने का सूचक माना जाता है। हालाँकि यह समुदाय के कुछ अनुभागों या कतिपय क्षेत्रों तक ही सीमित था। वास्तव में, अंग्रेजी का 'ज्वॉइंट फैमिली' (Joint family) शब्द ही, जिसे हिंदी में संयुक्त परिवार' कहा जाता है, देशज़ नहीं है। आई०पी० देसाई के अनुसार, "अंग्रेजी का 'ज्वॉइंट फैमिली' शब्द किसी भी ऐसे भारतीय शब्द का अनुवाद नहीं है। यह बात रुचिकर है कि अधिकांश भारतीय भाषाओं में संयुक्त परिवार के लिए प्रयुक्त शब्द अंग्रेजी भाषा के 'ज्वॉइंट फैमिली' शब्द का ही अनुवादित पर्याय है।"

प्रश्न 22. जाति और वर्ग में अन्तर स्पष्ट कीजिए। । [2020]

उत्तर-

क्रम सं०	जाति	वर्ग
1.	जाति जन्म पर आधारित एक सामाजिक व्यवस्था है।	वर्ग एक कर्म पर आधारित सामाजिक अवधारणा है।
2.	जाति की सदस्यता प्रदत्त होती है जिसे व्यक्ति को प्राप्त करने के लिए मेहनत नहीं करनी पड़ती। वह उसे जन्म के आधार पर स्वत: ही प्राप्त हो जाती है।	वर्ग की सदस्यता अर्जित होती है, जिसे व्यक्ति को प्राप्त करने के लिए अथक प्रयास करने पड़ते हैं। वह व्यक्ति को उसके कर्मों के आधार पर प्राप्त होती है।
3.	जाति में गतिशीलता का अभाव पाया जाता है।	वर्ग में गतिशीलता व्याप्त होती है।
4.	जाति एक स्थिर अवधारणा है।	वर्ग एक अस्थिर अवधारणा है।
5.	जाति एक बंद वर्ग या व्यवस्था है, जिसे व्यक्ति बदल नहीं सकता है।	वर्ग एक मुक्त या खुली व्यवस्था है जिसे व्यक्ति अपनी क्षमतानुसार बदल सकता है।
6.	जाति समाज की एक अनौपचारिक व्यवस्था है।	वर्ग समाज की एक औपचारिक व्यवस्था है।
7.	जाति में सदस्यों के संबंध अनौपचारिक पाए जाते हैं।	वर्ग में सदस्यों के संबंध औपचारिक ही पाए जाते हैं।
8.	जाति की अपनी एक पंचायत-व्यवस्था होती है।	वर्ग की अपनी कोई पंचायत-व्यवस्था नहीं होती है।
9.	जाति के सदस्यों में हम की भावना पायी जाती है जो उन्हें आत्मीयता, प्रेम आदि की अनुभूति कराती है।	वर्ग में अहम् या मैं की भावना पायी जाती है जिससे लोग आपस में एक दूरी बनाकर रखते हैं।
10.	जाति के सदस्यों पर अनेक प्रकार के प्रतिबंध व नियम पाए जाते हैं।	वर्ग के सदस्यों पर कोई प्रतिबंध नहीं पाया जाता है और न ही कोई नियम।

प्रश्न 23. समूह की विशेषताएँ लिखिए।

उत्तर- समूह की विशेषताएँ निम्नलिखित हैं—

1. समूह-निर्माण के लिए दो या दो से अधिक व्यक्तियों का होना आवश्यक है।

2. समूह का निर्माण करने वाले लोगों के हित एवं रुचियाँ सामान्य होते हैं।

3. समूह के सदस्यों के बीच सामाजिक संबंध पाये जाते हैं।

4. प्रत्येक समूह के कुछ नियम होते हैं जिनके अनुसार सदस्यों के व्यवहारों को नियन्त्रित किया जाता है।

प्रश्न 24. मातृवंशीय परिवार से आप क्या समझते हैं? [2020]

उत्तर- ऐसे परिवार जिनमें माता परिवार की प्रमुख होती है, मातृवंशीय परिवार कहलाते हैं। जनजातियों में ऐसे परिवार पाये जाते हैं। .

प्रश्न 25. नातेदारी को परिभाषित कीजिए। [2020]

उत्तर- नातेदारी से अभिप्राय ऐसे व्यक्तियों के परस्पर संबंधों की व्यवस्था से है जो प्रजनन एवं वास्तविक वंशावली के आधार पर परस्पर संबंधित है। रॉबिन फॉक्स के अनुसार, "नातेदारी केवल मात्र स्वजन अर्थात् वास्तविक ख्यात अथवा कल्पित समरक्तता वाले व्यक्तियों के मध्य संबंध है।" रेडक्लिक ब्राउन के अनुसार, "नातेदारी सामाजिक उद्देश्यों के लिए स्वीकृत वंश संबंध है, जो कि सामाजिक संबंधों के परम्परात्मक संबंधों का आधार है।

प्रश्न 26. नातेदारी के प्रमुख प्रकार लिखिए।

उत्तर- नातेदारी का आधार संबंध और सामाजिक अन्त:क्रिया है। नातेदारी दो प्रकार की होती है—

1. समरक्तीय नातेदारा-- रक्त संबंधों को व्यक्त करने के लिए समरक्तता का प्रयोग किया जाता है। वे संबंध जो रक्त पर आधारित हैं, समरक्तीय कहलाते हैं। माता-पिता व बच्चों के बीच तथा सहोदरों का संबंध समरक्तीय संबंध है। भाई-बहन, चाचा-ताऊ, भतीजा आदि समरक्तीय संबंध में आते हैं।

2. वेवाहिक नातेदारी-- विवाह के बंधन पर आधारित संबंधों को वैवाहिक नातेदारी कहते हैं। विवाह से केवल वर या वधू के संबंध नहीं होते, अपितु वर या कन्या के परिवार के अन्य सदस्यों से भी संबंध स्थापित होते हैं; जैसे-बहनोई, जीजा, साढ़ू, देवरानी, जेठानी आदि। विवाह के कारण स्थापित होने वाले संबंधों को व्यक्त करने के लिए विवाह संबंध (Affinity) शब्द का प्रयोग किया जाता है।

प्रश्न 27. सामाजिक संसाधनों को पूँजी के कितने रूपों में विभाजित किया जा सकता है?

उत्तर- सामाजिक संसाधनों (धन, संपदा, शिक्षा, स्वास्थ्य एवं शक्ति) को पूँजी के तीन रूपों में विभाजित किया जा सकता है–(1) आर्थिक पूँजी : भौतिक संपत्ति एवं आय के रूप में; (2) सांस्कृतिक पूँजी: प्रतिष्ठा और शैक्षणिक योग्यताओं के रूप में और (3) सामाजिक पूँजी : सामाजिक संगतियों एवं संपर्कों के जाल के रूप में (बोर्दयू 1986)। पूँजी के ये तीनों रूप प्रायः आपस में घुले-मिले होते हैं और इन्हें एक-दूसरे में बदला जा सकता है। उदाहरणार्थ-एक संपन्न परिवार का व्यक्ति अपनी आर्थिक पूँजी के जरिए महँगी उच्च शिक्षा प्राप्त कर सकता है। इस तरह वह अपनी आर्थिक पूँजी को सांस्कृतिक एवं शैक्षणिक स्वरूप दे सकता है। उसी प्रकार एक अन्य व्यक्ति अपने प्रभावशाली मित्रों व संबंधियों (यानी अपनी सामाजिक पूँजी) के जरिए अच्छी सलाह, सिफारिश या जानकारी पा सकता है और इनके द्वारा एक अच्छी आय वाली नौकरी पाकर सामाजिक पूँजी को आर्थिक पूँजी में बदल सकता है।

प्रश्न 28.. सामाजिक विषमता से क्या अभिप्राय है? [2020]

अथवा

सामाजिक विषमता व्यक्तियों की विषमता से कैसे भिन्न है? [NCERT]

उत्तर- सामाजिक संसाधनों तक असमान पहँच की पद्धति ही साधारणतया सामाजिक विषमता कहलाती है। कुछ सामाजिक विषमताएँ व्यक्तियों के बीच स्वाभाविक भिन्नता को प्रतिबिंबित करती हैं; जैसे-उनकी योग्यता एवं प्रयास में भिन्नता। कोई व्यक्ति असाधारण बुद्धिमान या प्रतिभावान हो सकता है या यह भी हो सकता है कि उसने समृद्धि और अच्छी स्थिति पाने के लिए कठोर परिश्रम किया हो तथापि सामाजिक विषमता व्यक्तियों के बीच सहज या 'प्राकृतिक' भिन्नता के कारण नहीं है, बल्कि यह उस समाज द्वारा उत्पन्न की जाती है जिसमें वे रहते हैं।

प्रश्न 29. सामाजिक स्तरीकरण की कुछ विशेषताएँ बतलाइए। [NCERT]

उत्तर- सामाजिक स्तरीकरण वह व्यवस्था है जो एक समाज में लोगों का वर्गीकरण करते हुए एक अधिक्रमित संरचना में उन्हें श्रेणीबद्ध करती है। यह अधिक्रम लोगों की पहचान एवं अनुभव, उनके दूसरों से संबंध तथा साथ ही संसाधनों एवं अवसरों तक उनकी पहुँच को आकार देता है। सामाजिक स्तरीकरण की कुछ विशेषताएँ निम्न प्रकार हैं--

1. सामाजिक स्तरीकरण व्यक्तियों के बीच की विभिन्नता का प्रकार्य ही नहीं बल्कि समाज की एक विशिष्टता है।

2. सामाजिक स्तरीकरण पीढ़ी-दर-पीढ़ी बना रहता है।

3. सामाजिक स्तरीकरण को विश्वास या विचारधारा द्वारा समर्थन मिलता है।

प्रश्न 30. पूर्वाग्रह से आप क्या समझते हैं? [NCERT, 2020]

अथवा

आप पूर्वाग्रह और अन्य किस्म की राय अथवा विश्वास के बीच भेद कैसे करेंगे?

उत्तर- पूर्वाग्रह एक समूह के सदस्यों द्वारा दूसरे समूह के बारे में पूर्वकल्पित विचार या व्यवहार होता है। इस शब्द का अक्षरश: अर्थ 'पूर्वनिर्णय' है अर्थात् वह धारणा जो बिना विषय को जाने और बिना उसके तथ्यों को परखे शुरुआत में ही बना ली जाती है। एक पूर्वागृहीत व्यक्ति के पूर्वकल्पित विचार

सबूत-साक्ष्यों की जगह सुनी-सुनाई बातों पर आधारित होते हैं। यह नई जानकारी प्राप्त होने के बावजूद बदलने से इंकार करते हैं। पूर्वाग्रह सकारात्मक एवं नकारात्मक दोनों हो सकता है। वैसे अधिकतर यह शब्द नकारात्मक रूप से लिए गए पूर्व-निर्णयों के लिए इस्तेमाल होता है। यद्यपि यह स्वीकारात्मक पूर्व-निर्णयों पर भी लागू होता है। उदाहरणार्थ-एक व्यक्ति अपनी जाति और समूह के सदस्यों के पक्ष में पूर्वागृहीत हो सकता है और उन्हें बिना किसी सबूत के दूसरी जाति या समूह के सदस्यों से श्रेष्ठ मान सकता है।

प्रश्न 31. सामाजिक अपवर्जन या बहिष्कार क्या है? [NCERT]

अथवा

सामाजिक अपवर्जन या बहिष्करण का क्या आशय है? [2020]

उत्तर- सामाजिक अपवर्जन या बहिष्कार वह तौर-तरीके हैं जिनके जरिए किसी व्यक्ति या समूह को समाज में पूरी तरह घुलने-मिलने से रोका जाता है अथवा अलग या पृथक् रखा जाता है। यह उन सभी कारकों पर ध्यान दिलाता है जो व्यक्ति या समूह को उन अवसरों से वंचित करते हैं जो अधिकांश जनसंख्या के लिए खुले होते हैं। सामाजिक बहिष्कार अनैच्छिक होता है, अर्थात् बहिष्कार बहिष्कृत लोगों की इच्छाओं के खिलाफ कार्यान्वित होता है। उदाहरणार्थ-शहरों तथा कस्बों में हम हजारों बेघर गरीब लोगों की तरह 'धनी व्यक्तियों को कभी भी फुटपाथ या पुलों के नीचे सोते हुए नहीं देखते हैं। इसका अर्थ यह नहीं कि धनी व्यक्ति फुटपाथ या पार्कों का प्रयोग करने से 'बहिष्कृत' हैं।

प्रश्न 32. आज जाति और आर्थिक असमानता के बीच क्या संबंध है? [NCERT)

उत्तर- अधिक्रमित जाति-व्यवस्था के अंतर्गत प्रत्येक जाति को एक विशिष्ट स्थान प्राप्त होता है। सामाजिक तथा जातिगत अवस्था तथा आर्थिक अवस्था के मध्य गहरा संबंध होता है। उच्च जातियों की आर्थिक अवस्था बहुत अच्छी होती है, जबकि निम्न जातियों की आर्थिक स्थिति खराब होती हैं। यद्यपि समय के अनुसार समाज निश्चित रूप से बदला है, लेकिन व्यापक स्तर पर बहुत ज्यादा परिवर्तन नहीं हुआ है। यह आज भी सच है कि समाज का साधन-संपन्न व ऊँचे ओहदे वाले वर्ग में अत्यधिक कथित 'उच्च' जाति के लोग हैं, जबकि वंचित (तथा निम्न आर्थिक स्थिति वाले) वर्ग में कथित 'निम्न' जातियों की प्रधानता है। इसके अलावा कथित 'ऊँची' व 'नीची' जातियों के गरीब और संपन्न तबकों के अनुपात में जमीन-आसमान का अंतर है। अतः कह सकते हैं कि प्रारम्भ से अब तक जाति और आर्थिक व्यवस्था में काफी अंतर आया है, लेकिन व्यापक रूप से स्थितियों में अब भी

कोई उल्लेखनीय परिवर्तन नहीं आया है। उच्च वर्ग के लोगों की उच्च आर्थिक अवस्था तथा निम्न वर्ग के लोगों की निम्नतर आर्थिक अवस्था अब भी विद्यमान है।

प्रश्न 33. अस्पृश्यता क्या है? [NCERT]

उत्तर- 'अस्पृश्यता' को आम बोलचाल की भाषा में 'छुआछूत' कहा जाता है। यह जाति-व्यवस्था का एक अत्यंत घृणित एवं दूषित पहलू है, जो धार्मिक एवं कर्मकांडीय दृष्टि से शुद्धता एवं अशुद्धता के पैमाने पर सबसे नीची मानी जाने वाली जातियों के सदस्यों के विरुद्ध अत्यंत कठोर सामाजिक अनुशास्त्रियों (दंडों) का विधान करता है। 'अस्पृश्य' यानी अछूत मानी जाने वाली जातियों का जाति सोपान या अधिक्रम में कोई स्थान ही नहीं है, वे तो इस व्यवस्था से बाहर हैं। उन्हें इतना अधिक 'अशुद्ध' एवं अपवित्र माना जाता है कि उनके जरा छू जाने भर से ही अन्य सभी जातियों के सदस्य अत्यंत अशुद्ध हो जाते हैं, जिसके कारण अछूत कहे जाने वाले व्यक्ति को तो अत्यधिक कठोर दंड भुगतना पड़ता ही है, साथ ही उच्च जाति का जो व्यक्ति छुआ गया है उसे भी फिर से शुद्ध होने के लिए कई शुद्धीकरण क्रियाएँ करनी होती हैं। वास्तव में, भारत के कई क्षेत्रों (विशेष रूप से दक्षिण भारत) में 'दूर से अशुद्धता' की धारणा विद्यमान थी जिसके अनुसार, 'अछूत' समझे जाने वाले व्यक्ति की उपस्थिति अथवा छाया ही अशुद्ध समझी जाती थी। इस शब्द का आक्षरिक अर्थ सीमित होने के बावजूद, 'अस्पृश्यता' की संस्था शारीरिक संपर्क से बचने या अछूत से दूर रहने का आदेश तो देती ही है, साथ ही तथाकथित अछूत के लिए कई सामाजिक अनुशास्त्रियों की व्यवस्था भी करती है।

प्रश्न 34. 'दलित' शब्द का क्या अर्थ है? यह शब्द कैसे प्रचलन में आया? [2020]

अथवा

दलित से आप क्या समझते हैं? [2020]

अथवा

दलित शब्द का प्रयोग आमतौर पर किस अर्थ में किया जाता है? [2020]

उत्तर- 'दलित' भूतपूर्व अस्पृश्य समुदायों और उनके नेताओं द्वारा गढ़ा गया शब्द है, जो इन सभी समूहों का उल्लेख करने के लिए अब आमतौर पर स्वीकार कर लिया गया है। भारतीय भाषाओं में, दलित शब्द का आक्षरिक अर्थ है– 'पैरों से कुचला हुआ' और यह उत्पीड़ित लोगों का द्योतक है। यह शब्द न तो डॉक्टर अंबेडकर द्वारा गढ़ा गया था और न ही अक्सर उनके द्वारा इसका प्रयोग किया गया था, परन्तु इसमें उनका चिंतन तथा दर्शन एवं उनके उस आंदोलन का मूलभाव निश्चित रूप से

गुंजायमान है जो उनके नेतृत्व में दलितों को सशक्त बनाने के लिए चलाया गया था। 1970 के दशक में मुंबई में हुए जातीय दंगों के दौरान इस शब्द का प्रयोग बहुत व्यापक रूप से किया गया। उस समय पश्चिमी भारत में दलित पैंथर्स' नाम का जो उग्र समूह उभरा, उसने अपने अधिकारों तथा मान-मर्यादा के लिए चलाए गए संघर्ष के अंतर्गत अपनी अलग पहचान बनाने के लिए इस शब्द का प्रयोग किया।

प्रश्न 35. अन्य पिछड़े वर्ग दलितों (या अनुसूचित जातियों) से भिन्न कैसे हैं? [NCERT]

उत्तर- अस्पृश्यता सामाजिक भेदभाव का सर्वाधिक स्पष्ट एवं व्यापक रूप था। किंतु, जातियों का एक बहुत बड़ा समूह ऐसा भी था जिन्हें (जातियों को) नीचा समझा जाता था। उनके साथ तरह-तरह का भेदभाव भी बरता जाता था, परन्तु उन्हें अछूत नहीं माना जाता था। ये सेवा करने वाली शिल्पी (कारीगर) जातियों के लोग थे जिन्हें जाति-सोपान में नीचा स्थान प्राप्त था। भारत के संविधान में इस संभावना को स्वीकार किया गया है कि अनुसूचित जनजातियों और अनुसूचित जातियों के अलावा और भी कई समूह हो सकते है, जो सामाजिक असुविधाओं से पीड़ित हैं। ऐसे समूहों का जाति पर आधारित होना जरूरी नहीं है, लेकिन वे आमतौर पर किसी जाति के नाम से ही पहचाने जाते हैं। इन समूहों को 'सामाजिक और शैक्षिक रूप से पिछड़े वर्ग' कहा गया है। यह आम बोलचाल में प्रचलित 'अन्य पिछड़े वर्ग' (ओबीसी) शब्द का संवैधानिक आधार है, जो आजकल सामान्य रूप से प्रचलन में है।

प्रश्न 36. जाति पूर्वाग्रह को परिभाषित कीजिए। [2020]

उत्तर- भारत एक ऐसा देश है जिसमें अनेक जाति के लोग रहते हैं। प्रायः देखा गया है कि एक जाति के लोग दूसरी जाति के लोगों को अपने से तुच्छ एवं गिरा हुआ समझते हैं तथा उनके प्रति भेदभाव दिखलाते हैं। इसे ही 'जाति पूर्वाग्रह' कहा जाता है। इसके फलस्वरूप एक जाति के लोग आपस में एक-दूसरे को एक समाज का सदस्य मानते हैं चाहे वे किसी भी क्षेत्र, व्यवसाय या वर्ग के हों। अंततः जाति के नाम पर उस समाज में एकता बनी रहती है।

प्रश्न 37. संदर्भ समूह से क्या समझते हो? [2020]

उत्तर- यह वह समूह है जिसके साथ व्यक्ति उसकी आस्था, अभिवृत्ति व मूल्यों के रूप में एकरूप होना चाहता है यद्यपि वह इस समूह का वास्तविक सदस्य नहीं होता है। इस प्रकार कोई व्यक्ति स्वयं को

एक गांधीवादी, एक मार्क्सवादी आदि मानता है किन्तु वह इन समूहों का सदस्य नहीं भी हो सकता है।

प्रश्न 38. अन्तर्विवाह को समझाइए। [2020]

उत्तर- सामाजिक नियमानुसार प्रत्येक व्यक्ति को अपने ही वर्ग व जाति में विवाह करने की आज्ञा होती है। इस प्रकार एक ब्राह्मण युवक को न केवल ब्राह्मण कन्या से विवाह करना होता है बल्कि कान्यकुब्ज युवक को कान्यकुब्ज कन्या से विवाह करना होता है। कायस्थ जाति भी उपजातियों में विभाजित है; यथा-सक्सेना, माथुर, श्रीवास्तव, भटनागर आदि। कायस्थ युवक का विवाह, अन्तर्विवाही नियमानुसार उसी जाति में ही नहीं बल्कि उसी उपजाति में होता है। इस प्रकार अन्तर्विवाह में व्यक्ति उसी सांस्कृतिक समूह में विवाह करता है जिसका वह पहले से ही सदस्य है; जैसे-जाति।

प्रश्न 39. अनुसूचित जाति की दो समस्याएँ बताइए। [2020]

उत्तर- अनुसूचित जनजातियों की दो समस्याएँ निम्नलिखित हैं–

1. अशिक्षा तथा निरक्षरता--- अनुसूचित जनजातियों में आज भी निरक्षरता का प्रतिशत अन्य जातियों की अपेक्षा अधिक है। अशिक्षा के कारण ही जनजातीय समाज अनेक रूढ़ियों तथा अन्धविश्वासों में फँसा हुआ है।

2. स्वास्थ्य तथा मूलभूत सुविधाओं की अनुपलब्धता-- आज भी अधिकांश जनजातीय क्षेत्रों में समुचित सुविधाएँ तथा जीवन की मूलभूत आवश्यकताओं की पहुँच सम्भव नहीं हो सकी है। इससे उनको अनेक परेशानी का सामना करना पड़ता है। मलेरिया, चेचक, हैजा जैसी बीमारियाँ तो इन क्षेत्रों में रोजमर्रा में शामिल हैं।

प्रश्न 40. सामुदायिक पहचान क्या होती है और वह कैसे बनती है? [NCERT]

अथवा

समुदाय से आप क्या समझते हैं? [2020]

उत्तर- डेविस के अनुसार, समुदाय सबसे छोटा वह क्षेत्रीय समूह है जिसके अन्तर्गत सामाजिक जीवन के समस्त पहलू आ सकते हैं। 'हम' की भावना सामुदायिक भावना का प्रमुख अंग है। सदस्य समुदाय के कार्यों को करना अपना दायित्व समझते हैं। दूसरे शब्दों में, समुदाय किसी भी ऐसे विशिष्ट समूह

के लिए प्रयुक्त सामान्य शब्द है जिसके सदस्य सचेतन रूप से मान्यता प्राप्त समानताओं और नातेदारी के बंधनों, भाषा, संस्कृति आदि के कारण आपस में जुड़े हों। इन समानताओं में विश्वास उनके अस्तित्व के वास्तविक प्रमाण से कहीं अधिक महत्त्वपूर्ण होता है। सामुदायिक पहचान किसी अर्जित योग्यता या 'उपलब्धि' के आधार की जगह जन्म तथा अपनेपन पर आधारित होती है। यह 'हम क्या हैं' इस भाव की द्योतक है न कि 'हम क्या बन गए हैं। किसी समुदाय में जन्म लेने के लिए हमें कुछ नहीं करना होता। इस प्रकार की पहचानें 'प्रदत्त' कही जाती हैं अर्थात् ये जन्म से निर्धारित होती हैं और संबंधित व्यक्तियों की पसंद या नापसंद इसमें शामिल नहीं होती। सामाजिक जीवन का यह एक अजीब तथ्य है कि लोग उन समुदायों से संबंधित होकर अत्यंत सुरक्षित एवं संतुष्ट महसूस करते हैं जिनमें उनकी सदस्यता पूरी तरह आकस्मिक होती है। वास्तव में, अधिकांश प्रदत्त पहचानें इतनी पक्की होती हैं कि उन्हें हिलाया नहीं जा सकता; भले ही हम उन्हें अस्वीकार करने की कोशिश करें तब भी दूसरे लोग शायद उन्हीं चिह्नों से जोड़कर हमारी पहचान करते रहेंगे। सामुदायिक संबंधों (परिवार, नातेदारी, जाति, नृजातीयता, भाषा, क्षेत्र या धर्म) के बढ़ते हुए और परस्परव्यापी दायरे ही हमारी दुनिया को सार्थकता प्रदान करते हैं और हमें एक पहचान प्रदान करते हैं कि हम कौन हैं।

प्रश्न 41. राज्य अकसर सांस्कृतिक विविधता के बारे में शंकालु क्यों होते हैं? [NCERT]

उत्तर- राज्यों के अकसर सांस्कृतिक विविधता के बारे में शंकालु होने के निम्नलिखित कारण हैं–

1. राज्यों ने अपने राष्ट्र-निर्माण की रणनीतियों के माध्यम से अपनी राजनीतिक वैधता को स्थापित करने तथा उसे और अधिक बढ़ाने के प्रयास किए हैं।

2. राज्यों ने आत्मसात्करण और एकीकरण की नीतियों के द्वारा अपने नागरिकों की देशभक्ति, निष्ठा तथा आज्ञाकारिता प्राप्त करने के प्रयास किए हैं।

3. अधिकांश राज्य ऐसा मानते थे कि सांस्कृतिक विविधता खतरनाक है तथा उन्होंने इसे खत्म करने अथवा कम करने का पूरा प्रयास किया। अधिकांश राज्यों को यह डर था कि सांस्कृतिक विविधता; जैसे-नृजातीयता, भाषा और धार्मिकता इत्यादि की मान्यता प्रदान किए जाने से सामाजिक विखंडन की स्थिति उत्पन्न की जाएगी और समरसतापूर्ण समाज के निर्माण में बाधाएँ उत्पन्न होंगी।

4. इस तरह के अंतरों को समायोजित करना राजनीतिक दृष्टि से चनौतीपर्ण होता है। इस कारण अनेक राज्यों ने इन विभिन्न पहचानों को राजनीतिक स्तर पर दबाया या नजरअंदाज किया।

प्रश्न 42. क्षेत्रवाद क्या होता है। आमतौर पर यह किन कारकों पर आधारित होता है? [NCERI]

अथवा

क्षेत्रवाद को परिभाषित कीजिए। [2020]

अथवा

क्षेत्रवाद का क्या अर्थ है? [2020]

उत्तर- क्षेत्रवाद एक विशेष क्षेत्रीय पहचान के लिए प्रतिबद्ध विचारधारा है जो भौगोलिक क्षेत्र क अलावा भाषा, संजातीयता आदि अन्य विशेषताओं पर आधारित होती है। भारत जैसे देश में क्षेत्रवाद के पाये जाने का कारण यहाँ की भाषाओं, संस्कृतियों, जनजातियों और धर्मों की विविधता है। इसे विशेष क्षेत्रों में पहचान चिह्नकों के भौगोलिक संकेंद्रण के कारण भी प्रोत्साहन मिलता है और क्षेत्रीय वंचन (deprivation) का भाव अग्नि में घी का काम करता है। भारतीय संघवाद इन क्षेत्रीय भावकताओं को समायोजित करने वाला एक साधन है। यहाँ धर्म ने नहीं, बल्कि भाषा ने क्षेत्रीय तथा जनजातीय पहचान के साथ मिलकर नृजातीय-राष्ट्रीय पहचान बनाने के लिए एक अत्यधिक सशक्त साधन का काम किया है।

प्रश्न 43. संप्रदायवाद या सांप्रदायिकता क्या है? [NCERT, 2020]

अथवा

सांप्रदायिकता को परिभाषित कीजिए। [2020]

अथवा

सांप्रदायिकता का क्या अर्थ है? [2020]

उत्तर- आम बोलचाल की भाषा में 'सांप्रदायिकता या संप्रदायवाद' का अर्थ है-धार्मिक पहचान पर आधारित आक्रामक उग्रवाद। उग्रवाद, अपने आप में एक ऐसी अभिवृत्ति है जो अपने समूह को ही वैध या श्रेष्ठ समूह मानती है और अन्य समूहों को निम्न, अवैध अथवा विरोधी समझती है। सरल शब्दों में, सांप्रदायिकता धर्म से जुड़ी एक आक्रामक राजनीतिक विचारधारा है। यह एक अनूठा भारतीय अथवा शायद दक्षिण एशियाई अर्थ है जो साधारण अंग्रेजी शब्द के भाव से भिन्न है। अंग्रेजी भाषा में, 'कम्युनल (communal) शब्द का अर्थ है-व्यक्ति की बजाय समुदाय (यानी कम्युनिटी) या सामूहिकता से जुड़ा हुआ (व्यक्ति, भाव, विचार आदि)। अंग्रेजी अर्थ तटस्थ है जबकि दक्षिण एशियाई अर्थ प्रबल रूप से आवेशित है। इस आवेश को सकारात्मक दृष्टि से देखा जा सकता है, यदि देखने वाला सांप्रदायिकता के प्रति सहानुभूति रखता हो अथवा नकारात्मक दृष्टि से भी, यदि देखने वाला इसका विरोधी हो। संप्रदायवाद की एक प्रमुख विशिष्टता उसका यह दावा है कि धार्मिक पहचान अन्य सभी की तुलना में सर्वोपरि होती है। चाहे कोई गरीब हो या अमीर, चाहे किसी का कोई भी व्यवसाय हो,

जाति या राजनीतिक विश्वास हो, धर्म ही सब कुछ होता है, उसी के आधार पर उसकी पहचान है। मुसलमान, सिख आदि की तरह सभी हिंदू एकसमान होते हैं।

प्रश्न 44. साम्प्रदायिकता निवारण के लिए सुझाव दीजिए। [2020]

उत्तर- 1. सरकार को सदैव ही इस बात का ध्यान रखना चाहिए कि उसके द्वारा ऐसा कोई कार्य नहीं किया जाये, जिससे साम्प्रदायिकता को प्रोत्साहन मिले। समानता के संबंध में आदर्शों की बातें करने की अपेक्षा उसे व्यावहारिक रूप से क्रियान्वित करने का प्रयास किया जाना चाहिए।

2. भारत एक धर्म-निरपेक्ष राज्य है लेकिन शाश्वत नैतिक जीवन मूल्यों की शिक्षा तो सभी के लिए अनिवार्य होनी चाहिए। धर्म विशेष की शिक्षा के स्थान पर देशभक्ति तथा राष्ट्रीयता की भावना पैदा करने वाली शिक्षा होनी चाहिए।

3. धर्म के आधार पर किसी धार्मिक वर्ग के लिए कोई विशेष रियायतें या सुविधाएँ न दी जायें जिससे अन्य धर्मों के लोगों में ईर्ष्या की भावना पैदा हो।

4. साम्प्रदायिकता का एक सबसे बड़ा कारण चुनावों में लाभ की राजनीति है। राजनीतिक दल चुनावी फायता उठाने हेतु साम्प्रदायिकता को बढ़ावा देते हैं, इस पर कड़ा प्रतिबंध होना चाहिए।

प्रश्न 45. अल्पसंख्यकों की किन्हीं दो समस्याओं को लिखिए। [2020]

उत्तर- अल्पसंख्यकों की दो समस्याएँ निम्न प्रकार हैं–

1. शिक्षा संबंधी पिछड़ापन--- अल्पसंख्यक वर्गों में शिक्षा का निम्न स्तर एक प्रमुख समस्या है। इनके साथ पहले प्रवेश इत्यादि में भेदभाव किया जाता था। आज सरकार अल्पसंख्यकों की शिक्षा संबंधी जरूरतों पर विशेष ध्यान देकर इस समस्या का समाधान कर रही है।

2. 'असुरक्षा की भावना एवं साम्प्रदायिकता--- अल्पसंख्यक वर्गों की दूसरी प्रमुख समस्या इनमें व्याप्त असुरक्षा की भावना है। वे समझते हैं कि अल्पसंख्यक होने के कारण उनके हित सुरक्षित नहीं है। अगर साम्प्रदायिकता बढ़ती है तो इसके शिकार अल्पसंख्यक ही होंगे। यद्यपि यह भावना उचित नहीं है, फिर भी सरकार साम्प्रदायिता को रोकने तथा साम्प्रदायिक सद्भावना बढ़ाने के लिए दृढ़संकल्प है। इसके लिए सरकार द्वारा कठोर कदम उठाये गए हैं।

प्रश्न 46. सूचना का अधिकार (R.T.I.) अधिनियम कब पारित हुआ और इसका क्या तात्पर्य है? [2020]

उत्तर-- सूचना का अधिकार (R.T.I.) 15 जून, 2005 को पारित हुआ तथा 13 अक्टूबर, 2005 से लागू हुआ। यह कानून भारतीयों को सरकारी अधिलेखों तक पहुँचने का अधिकार देता है।

प्रश्न 47. आधुनिक भारत में 'सूचना का अधिकार अधिनियम' की उपलब्धियों की चर्चा कीजिए। [2020]

उत्तर- 1. प्रसिद्ध 2G घोटाला-- यह घोटाला उच्च पदों पर बैठे अधिकारियों द्वारा शक्तियों के दुरुपयोग का सबसे प्रमुख उदाहरण है। इस घोटाले के कारण भारत सरकार को ₹1,76,645 करोड़ का नुकसान हुआ था। उल्लेखनीय है कि यह बड़ा घोटाला तब सामने आया जब एक RTI कार्यकर्ता ने अधिनियम का उपयोग कर इसके खिलाफ एक RTI दायर की।

2. 2010 कॉमनवेल्थ गेम-- एक गैर-लाभकारी संगठन द्वारा दायर एक RTI से पता चला था कि दिल्ली सरकार ने राष्ट्रमंडल खेलों के लिए दलित समुदाय के कल्याण हेतु रखे गए फंड से ₹ 744 करोड़ निकाले थे। साथ ही RTI से यह भी सामने आया कि निकाले गए पैसों का प्रयोग जिन सुविधाओं पर किया गया वे सभी मात्र कागजों पर ही थीं।

प्रश्न 47. छोटी शोध परियोजनाओं हेतु कुछ समाजशास्त्रीय मुद्दों का उल्लेख कीजिए। [2020]

उत्तर- छोटी शोध परियोजनाओं हेतु कुछ समाजशास्त्रीय मुद्दे निम्न प्रकार हैं–

1. सार्वजनिक परिवहन,

2. सामाजिक जीवन में संचार माध्यमों की भूमिका,

3. घर-परिवार में काम आने वाले उपकरण एवं घरेलू कार्य,

4. सार्वजनिक स्थान का उपयोग,

5. विभिन्न आयु वर्गों की बदलती हुई आकांक्षाएँ तथा

6. एक वस्तु की जीवनी।

प्रश्न 48. प्रत्यक्ष प्रेक्षण क्या है?

उत्तर- प्रत्यक्ष प्रेक्षण शोध प्रश्नों का उत्तर प्राप्त करने की एक विधि है। इस विधि के अनुसार शोध प्रश्नों का उत्तर जानने के लिए आपको सह-शिक्षा और बालक/बालिका वाले विद्यालयों में कुछ समय यह अवलोकन करने में बिताना होगा कि वहाँ के छात्र कैसा व्यवहार करते हैं। आपको कुछ कसौटियाँ निर्धारित करनी होगी जिनके आधार पर आप यह कह सकेंगे कि छात्र अपने विद्यालय से कितना खुश हैं। इस प्रकार, पर्याप्त समय तक विभिन्न प्रकार के स्कूलों का अवलोकन करने के बाद आप अपने प्रश्न का ठीक उत्तर देने की आशा कर सकेंगे।

प्रश्न 49. एक से अधिक पद्धतियों के सम्मिश्रण पर प्रकाश डालिए।

उत्तर- एकसे अधिक पद्धतियों का सम्मिश्रण--- एक ही शोध प्रश्न पर विभिन्न दृष्टिकोणों से विचार करने के लिए पद्धतियों का सम्मिश्रण भी किया जा सकता है। वस्तुतः इस सम्मिश्रण को अपनाने के लिए अक्सर सिफारिश की जाती है। उदाहरणार्थ-यदि आप सामाजिक जीवन में समाचारपत्र और टेलीविजन जैसे जनसंचार के साधनों की बदलती हुई स्थिति के बारे में शोध कर रहे हैं तो आप सर्वेक्षण और ऐतिहासिक पद्धतियों को एक साथ अपना सकते हैं। सर्वेक्षण आपको यह बतला देगा कि आज क्या हो रहा है, जबकि ऐतिहासिक पद्धति से आपको यह पता चल सकेगा कि पहले पत्रिकाएँ समाचारपत्र अथवा टेलीविजन के कार्यक्रम कैसे होते थे।

प्रश्न 50. शोध विषय 'सार्वजनिक स्थान का उपयोग' किसके बारे में है?

उत्तर- यह शोध विषय उन सार्वजनिक स्थानों (जैसे–खला मैदान, सड़क के किनारे की जगह या पैदल-पटरी, आवासीय बस्तियों में खाली पड़े भूखंड, सार्वजनिक कार्यालयों के बाहर की खाली जगह, आदि) के बारे में है जिनका उपयोग विभिन्न तरह से किया जाता है। उदाहरणार्थ-कुछ खाली जगहों में ता कई तरह के छोटे-छोटे काम-धंधे चलते हैं; जैसे-सड़क के किनारे की खाली जगह में छिटपुट सामान बेचने वाले खड़े होते हैं, छोटी-मोटी कामचलाऊ दुकानें होती हैं अथवा वाहन खड़े किए जाते हैं। अन्य जगहें, वैसे तो खाली दिखाई देती हैं, लेकिन समय-समय पर विभिन्न तरीकों से काम में लाई जाती है; जैसे-विवाह या धार्मिक समारोहों के लिए, सार्वजनिक बैठकों के लिए, अथवा कई तरह की चीजें फेंकने के लिए...अनेक खाली स्थानों पर बेघर गरीब लोग रहने लगते हैं और इस प्रकार वहाँ उनके घर ही बन जाते हैं।

प्रश्न 51. सामाजिक संरचना का क्या अर्थ है?

उत्तर- समाजशास्त्रियों के अनुसार, सामाजिक संरचना का अर्थ "लोगों के संबंधों की वह सतत व्यवस्था है जिसे सामाजिक रूप से स्थापित प्रारूप अथवा व्यवहार के प्रतिमान के रूप में सामाजिक सस्थाओं और संस्कृति के द्वारा परिभाषित और नियंत्रित किया जाता है।"

प्रश्न 52. उपनिवेशवाद के दौरान अंग्रेजी शिक्षा का भारतीयों पर क्या प्रभाव पड़ा?

उत्तर- उपनिवेशवाद के दौरान अग्रेजी शिक्षा से एक नए मध्य वर्ग का जन्म हुआ। अंग्रेजी भाषा में कुशल नए मध्यवीय भारतीयों ने पश्चिम के अनेक दार्शनिकों के विचारों को पढा जाना तथा उनके उदार-प्रजातंत्र की अवधारणा से अवगत हुए। इन भारतीयों ने भारत को उदारता और प्रगतिशीलता के एक नए रास्ते पर लाने का सपना देखा।

प्रश्न 53. आधुनिकीकरण से आप क्या समझते हैं? [2020]

उत्तर- आधुनिकीकरण शब्द का एक लंबा इतिहास है। 19वीं सदी से और विशेषकर 20वीं सदी के दौरान, इस शब्द को सकारात्मक और वांछनीय मूल्यों से जोड़कर समझा जाने लगा। प्रत्येक समाज और उसके लोग आधुनिक बनना चाहते थे। प्रारंभिक वर्षों में आधुनिकीकरण का आशय प्रौद्योगिकी और उत्पादन प्रक्रियाओं में होने वाले सुधार से था। बाद में इस शब्द के वृहद् मतलब सामने आने लगे। इसका मतलब विकास का वो तरीका हो गया जिसे पश्चिमी यूरोप या उत्तरी अमेरिका ने अपनाया। तदुपरांत ये सलाह दी जाने लगी कि अन्य समाजों में भी, आवश्यक रूप से विकास का यही तरीका और रास्ता अपनाया जाना चाहिए।

प्रश्न 54. राष्ट्रीय पहचान के प्रतीक राष्ट्रवाद की प्रेरणा है। व्याख्या कीजिए। [2020]

उत्तर- भाषा, संस्कृति और प्रजातीयता तीन प्रमुख कारण हम राष्ट्रीय पहचान के मानते हैं। यही राष्ट्रवाद की प्रेरणा है। हिटलर जर्मन भाषा, संस्कृति और प्रजातीयता पर गर्व करता था। उसने इसे ही राष्ट्रवाद का प्रतीक बनाकर राष्ट्रवाद को बढ़ावा दिया।

प्रश्न 55. भारत में आधुनिकीकरण के किन्हीं तीन दुष्परिणामों की विवेचना कीजिए। [2020]

उत्तर- भारत में आधुनिकीकरण के तीन दुष्परिणाम निम्नलिखित हैं–

1. बेरोजगारी में वृद्धि--- आधुनिकीकरण के फलस्वरूप मशीनीकरण भी तेजी से बढ़ रहा है। मशीनीकरण के कारण श्रमिकों को रोजगार नहीं मिलने में कठिनाई हो रही है क्योंकि मशीनों के कारण श्रमिकों की कम आवश्यकता होती है।

2. औपचारिक सम्बन्धों में वृद्धि--- आधुनिकीकरण से फलस्वरूप औपचारिक सम्बन्धों में वृद्धि हो रही है। औपचारिक सम्बन्धों के कारण घनिष्ठ सम्बन्धों का अभाव बढ़ता जा रहा है। अब सामाजिक सम्बन्धों में कृत्रिमता अधिक पायी जाती है।

3. पाश्चमीकरण--- आधनिकीकरण के कारण भारत में पश्चिमीकरण तीव्र गति से हो रहा है। भारत में

सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक, शिक्षा आदि सभी क्षेत्रों में पश्चिमीकरण का प्रभाव देखा जा सकता है।

प्रश्न 56. आधुनिकीकरण की तीन विशेषताएँ बताइए। [2020]

उत्तर- 'आधुनिकीकरण की तीन विशेषताएँ निम्नलिखित हैं--

1. इसमें नगरीकरण में वद्धि, समानता, स्वतंत्रता तथा प्रजातांत्रिक मूल्यों का विकास होता है।

2. यह विज्ञान और प्रौद्योगिकी विकास की आत्मा है। इससे भिन्न प्रकार के ज्ञान और अनुभव में वृद्धि होती है।

3. इससे आर्थिक तथा राजनीतिक सहभागिता में वृद्धि होती है।

प्रश्न 57. सामाजिक परिवर्तन के दो प्रमुख सिद्धान्त कौन-से हैं? [2020]

उत्तर- सामाजिक परिवर्तन के दो प्रमुख सिद्धान्त अनलिखित हैं--

1. रखाय सिद्धान्त-रैखिक सिद्धान्त में सामाजिक परिवर्तन को एक निश्चित पूर्व निर्धारित रूप में देखा जाता है। यह विकासवादी विचारधारा की तरह इस बात को स्वीकार करता है कि विकास अथवा परिवर्तन की गति कछ निश्चित स्तरों से गुजरती है। दूसरे शब्दों में यह कहा जा सकता है कि रेखीय सिद्धान्त में परिवर्तन को निरन्तर आगे की ओर (जैसे कि एक रेखा) बढ़ते हुए देखने का प्रयास किया गया है तथा यह इस मान्यता पर आधारित है कि इतिहास अपने आपको कभी दोहराता नहीं है। कोमेंट (Comte), स्पेन्सर (Spencer), हॉबहाउस (Hobhouse) तथा माक्र्स (Marx) रैखिक सिद्धांत के समर्थक विद्वान माने जाते हैं।

2. चक्रीय सिद्धान्त--- चक्रीय सिद्धान्त में सामाजिक परिवर्तन की तुलना एक चक्र से की गई है। यह इस मान्यता पर आधारित है कि इतिहास अपने आप को पुनः दोहराता है। परिवर्तन की यद्यपि अनेक अवस्थाएँ हैं परन्तु यह एक चक्र की तरह बार-बार आती रहती है। संस्कृति एवं समान में उतार-चढ़ाव के रूप में परिवर्तन होते रहते हैं जो चक्रवत् होते हैं। सृष्टि उत्पन्न होती है, विकसित होती है, समाप्त हो जाती है तथा फिर इसका पुनः निर्माण होता है। व्यक्ति भी जन्म लेकर क्रमश शिशु किशोर, युवा प्रौढ़ तथा वृद्ध होता है और मर जाता है। यह जीवन चक्र सदैव चलता रहता है।पौधा उत्पन्न होता है, विकास पाता है, पल्लवित-पुष्पित होता है और फिर सूख जाता है। अपनी पुस्तक 'डिक्लाइन ऑफ दि वैस्ट' (Decline of the West) में स्पेन्गलर (Spengler) सांस्कृतिक चक्र को मौसमों के चक्र के समान बताता है। क्रोबर, चेपिन तथा टॉयनबी जैसे विद्वानों ने भी जीवन के विविध पहलुओं से सम्बन्धित चक्र को समझाया है।

प्रश्न 58. लोकतंत्र क्या है?

उत्तर- अमेरिकी राष्ट्रपति अब्राहम लिंकन के अनुसार, "लोकतंत्र जनता का, जनता के द्वारा, जनता के लिए शासन है।" लोकतंत्र की दो मुख्य श्रेणियाँ हैं–प्रत्यक्ष लोकतंत्र और प्रतिनिधिक (परोक्ष) लोकतंत्र ।

प्रश्न 59. प्रत्यक्ष लोकतंत्र से आप क्या समझते हैं?

उत्तर- प्रत्यक्ष लोकतंत्र में सभी नागरिक, बिना किसी चयनित या मनोनीत पदाधिकारी की मध्यस्थता के सार्वजनिक निर्णयों में स्वयं भाग लेते हैं लेकिन यह पद्धति केवल वहीं व्यावहारिक है जहाँ लोगों की संख्या सीमित हो। उदाहरणार्थ-एक सामुदायिक संगठन या आदिवासी परिषद् या फिर किसी श्रमिक संघ की स्थानीय इकाई, जहाँ सभी सदस्य एक कक्ष में एकत्र होकर विभिन्न मुद्दों पर परिचर्चा कर सकें और सर्वसम्मति या बहुमत से निर्णय ले सकें।

प्रश्न 60. कानून और न्याय में क्या अंतर है?

अथवा

संविधान से क्या अभिप्राय है?

उत्तर- कानून का सार इसकी शक्ति है। कानून इसलिए कानून है क्योंकि इससे बल प्रयोग अथवा अनुपालन के संचरण के माध्यमों का प्रयोग होता है। इसके पीछे राज्य की शक्ति निहित होती है। न्याय का सार निष्पक्षता है। कानून की कोई भी प्रणाली अधिकारियों के संस्तरण के माध्यम से ही

कार्यरत होती है। ऐसे प्रमुख मानदंड जिनसे नियम और अधिकारी संचालित होते हैं, संविधान कहलाता है। संविधान वह माध्यम है जो राजनीतिक शक्ति को सामाजिक हित की ओर प्रवाहित करता है और उसे सुसंगत बनाता है। यह एक ऐसा दस्तावेज है जिससे किसी राष्ट्र के सिद्धांतों का निर्माण होता है। भारतीय संविधान भारत का मूल मानदंड है। अन्य सभी कानून, संविधान द्वारा नियत कार्यप्रणाली के अंतर्गत बनते हैं। ये कानून संविधान द्वारा निश्चित अधिकारियों द्वारा बनाए एवं लागू किए जाते हैं। कोई विवाद होने पर संविधान द्वारा अधिकार प्राप्त न्यायालयों के संस्तरण द्वारा कानून की व्याख्या होती है। 'उच्चतम न्यायालय' सर्वोच्च है और वही संविधान का सबसे अंतिम व्याख्याकर्ता भी है।

प्रश्न 61. जनतांत्रिक राजनीति से आप क्या समझते हैं? [2020]

उत्तर- जनतांत्रिक राजनीति से अभिप्राय राजनीति के उस प्रारूप से है जिसमें आम लोग (जनता) चुनाव के माध्यम से सरकार का चयन करते हैं। इसके लिए विभिन्न राजनीतिक दल अपने-अपने प्रत्याशी चुनाव में उतारते हैं तथा बहुमत प्राप्त करने वाला दल सरकार का गठन करता है।

प्रश्न 62. वैश्वीकरण के लाभ क्या-क्या हैं? [2020]

उत्तर- वैश्वीकरण के लाभ निम्नलिखित हैं-

1. नवीन तकनीकों का आगमन--- वैश्वीकरण द्वारा विदेशी पूँजी के निवेश में वृद्धि होती है एवं नवीन तकनीकों का आगमन होता है, जिससे श्रम की उत्पादकता एवं उत्पाद की किस्म में सुधार होता है।

2. जीवन-स्तर में वृद्धि--- वैश्वीकरण से जीवन-स्तर में वृद्धि होती है, क्योंकि उपभोक्ता को पर्याप्त मात्रा में उत्तम किस्म की वस्तुएँ न्यूनतम मूल्य पर मिल जाती हैं।

3. विदेशी विनियोजन--- वैश्वीकरण के विकसित राष्ट्र अपनी अतिरिक्त पँजी अर्द्धविकसित एक विकासशील राष्ट्रों में विनियोग करते हैं। विदेशी पूँजी के आगमन से इन देशों का विनियोग बड़ी मात्रा में हुआ है।

4. विदेशों में रोजगार के अवसर-- वैश्वीकरण से एक देश के लोग दूसरे देशों में रोजगार प्राप्त करन में सक्षम होते हैं।

5. विदेशी व्यापार में वृद्धि-- आयात-निर्यात पर लगे अनावश्यक प्रतिबन्ध समाप्त हो जाते है तथा संरक्षण नीति समाप्त हो जाने से विदेशी व्यापार में पर्याप्त वृद्धि होती है।

6. अन्तर्राष्ट्रीय सहयोग में वद्धि-- जब वैश्वीकरण अपनाया जाता है, तो आर्थिक सम्बन्धों में सुधार हाने के साथ ही राजनीतिक सम्बन्धों में भी सुधार होता है। उदाहरणस्वरूप वैश्वीकरण के कारण वर्तमान के भारत में अमेरिका, जर्मनी एवं अन्य यूरोपीय देशों से सम्बन्ध सुधर रहे हैं।

प्रश्न 63. पंचायती राज से आप क्या समझते हैं?

उत्तर- पंचायती राज का शाब्दिक अनुवाद होता है-'पाँच व्यक्तियों द्वारा शासन'। इसका अर्थ गाँव एवं अन्य जमीनी स्तर पर लचीले लोकतंत्र की क्रियाशीलता से है। भारत गाँवों में बसता है। गांव भारत गणराज्य की आत्मा है। गाँवों का विकास करके ही भारत का सर्वांगीण विकास किया जा सकता है। ग्रामीण क्षेत्री के विकास के लिए 'पंचायती राज' की व्यवस्था की गई है। पंचायती राज का मुख्य आधार व्यवस्था म जनसामान्य की भागीदारी है। ग्राम पंचायतों से संबंधित निदेशक सिद्धांत एक संशोधन के रूप में के० सथानम द्वारा संविधान सभा में लाया गया था। 40 साल के बाद 1992 के 73वें संशोधन में यह एक सवधानक विधेयक बन गया।

प्रश्न 64. वन पंचायत पर संक्षिप्त टिप्पणी लिखिए।

उत्तर- उत्तराखंड में अधिकांश कार्य महिलाएँ करती हैं, क्योंकि पुरुष प्रायः रक्षा सेवाओं के लिए बाहर नियक्त होते हैं। खाना बनाने के लिए अधिकांश ग्रामीण लकड़ियों का प्रयोग करते हैं। हालाकि वना का कटाव पर्वतीय क्षेत्रों की एक बड़ी समस्या है। कभी-कभी पशुओं का चारा और लकड़ी एकत्रित करने के लिए औरतों को मीलों पैदल चलना पड़ता है। इस समस्या के समाधान के लिए औरतों ने वन-पंचायतों का स्थापना की। वन-पंचायत की औरतें पौधशालाएँ बनाकर छोटे पौधों का पालन-पोषण करती हैं, जिन्हें पहाड़ी ढालों पर रोपा जा सके। इसकी सदस्य आसपास के जंगलों की अवैध कटाई से सुरक्षा भी करती हैं। चिपको आंदोलन–जिसमें कि पेड़ों को कटने से बचाने के लिए औरतें उनसे चिपक जाती थीं, इस क्षेत्र में ही प्रारंभ किया गया था।

प्रश्न 65. संरचनात्मक और सांस्कृतिक परिवर्तन घनिष्ठ रूप में एक-दूसरे से संबद्ध हैं। उदाहरण देकर समझाइए।

उत्तर- भारतीयों के लिए भूमि उत्पादन का एक महत्वपूर्ण साधन होने के साथ-साथ संपत्ति का भी एक महत्वपूर्ण प्रकार है.लेकिन भूमि न तो केवल उत्पादन का साधन है और न ही केवल संपत्ति का एक प्रकार। न ही केवल कृषि है जो कि उनकी जीविका का एक प्रकार है। यह जीने का एक तरीका भी है। हमारी अनेक सांस्कृतिक रस्मों और उनके प्रकार में कृषि की पृष्ठभूमि होती है। ये संरचनात्मक

और सांस्कृतिक परिवर्तन घनिष्ठ रूप में एक-दूसरे से जुड़े हुए हैं। उदाहरणार्थ-भारत के विभिन्न क्षेत्रों में नववर्ष के त्योहार; जैसे-तमिलनाडु में पोंगल, असम में बीहू, पंजाब में बैसाखी, कर्नाटक में उगाड़ी आदि सब मुख्य रूप से फसल काटने के समय मनाए जाते हैं और नए कृषि मौसम के आने की घोषणा करते हैं।

प्रश्न 66. प्रबल जाति का कृषि संरचना से क्या संबंध है?

उत्तर- भारत के प्रत्येक ग्रामीण क्षेत्र में, सामान्यत: एक या दो जातियों के लोग ही भूस्वामी होते हैं, वे संख्या के आधार पर भी बहुत महत्त्वपूर्ण हैं। समाजशास्त्री एम०एन० श्रीनिवास ने ऐसे लोगों को प्रबल जाति का नाम दिया, जो प्रत्येक क्षेत्र में, प्रबल जाति समूह अत्यधिक शक्तिशाली होता है। वह आर्थिक और राजनीतिक रूप से स्थानीय लोगों पर प्रभुत्व बनाए रखता है। उत्तर प्रदेश के जाट और राजपूत, कर्नाटक के वोक्कालिगास और लिंगायत, आंध्र प्रदेश के कंम्मास और रेड्डी तथा पंजाब के जाट सिख प्रबल भूस्वामी समूहों के उदाहरण हैं। समान्यतः प्रबल भूस्वामियों के समूहों में मध्य और ऊँची जातीय समूहों के लोग आते हैं, अधिकांश सीमांत किसान और भूमिहीन लोग निम्न जातीय समूहों के होते हैं।

प्रश्न 67. हलपति किसे कहते हैं?

उत्तर- उत्तरी भारत के कई भागों में आज भी बेगार' और मुफ्त मजदूरी जैसी पद्धति प्रचलित है। गाँव के जमींदार या भूस्वामी के यहाँ निम्न जाति समूह के सदस्य वर्ष में कुछ निश्चित दिनों तक मजदूरी करते हैं। इसी तरह, संसाधनों की कमी और भूस्वामियों की आर्थिक, सामाजिक और राजनीतिक सहायता लेने के लिए बहुत-से गरीब कामगार पीढ़ियों से उनके यहाँ बँधुआ मजदूर की तरह काम कर रहे हैं। गुजरात में इस व्यवस्था को 'हलपति' के नाम से जाना जाता है (ब्रेमन, 1974), जबकि कर्नाटक में इसे 'जीता' कहते हैं। हालाँकि कानूनन इस तरह की व्यवस्थाएँ समाप्त हो गई हैं, लेकिन कई क्षेत्रों में यह अभी भी चल रही हैं।

प्रश्न 68. हरित क्रांति से आप क्या समझते हैं?

उत्तर- हरित क्रांति द्वारा 1960-70 के दशकों की उन क्षेत्रों में जहाँ यह प्रभावशाली रही, महत्त्वपूर्ण परिवर्तन हुए। हरित क्रांति कृषि आधुनिकीकरण का एक सरकारी कार्यक्रम था। इसके लिए आर्थिक सहायता अंतर्राष्ट्रीय संस्थाओं द्वारा दी गई थी तथा यह अधिक उत्पादकता वाले अथवा संकर बीजों के साथ कीटनाशकों, खादों तथा किसानों के लिए अन्य निवेश देने पर केंद्रित थी। हरित क्रांति

कार्यक्रम केवल उन्ही क्षेत्रों में लागू किया गया था जहाँ सिंचाई का समचित प्रबंध था क्योंकि नए बीजों तथा कृषि पद्धति हेतु समुचित जल की आवश्यकता थी। यह कार्यक्रम.मुख्य रूप से गेहूँ तथा चावल उत्पाद करने वाले क्षेत्रों पर ही लक्षित थी। परिणामस्वरूप हरित क्रांति पैकेज की प्रथम लहर केवल कुछ क्षेत्रों में; जैसेगा पंजाब, पश्चिमी उत्तर प्रदेश, तटीय आंध्र प्रदेश तथा तमिलनाडु के कुछ हिस्सों में ही चली। नयी तकनीक द्वारा कषि उत्पादकता में अत्यधिक वृद्धि हई। दशकों बाद पहली बार भारत खाद्यान्न उत्पादन में स्वावलंबी बनने में सक्षम हुआ। हरित क्रांति सरकार तथा इसमें योगदान देने वाले वैज्ञानिकों की एक महत्त्वपूर्ण उपलब्धि मानी गई है।

प्रश्न 69. जीवननिर्वाही कृषक और काश्तकार से क्या अभिप्राय है?

उत्तर- जब कृषक मूल रूप से स्वयं के लिए उत्पादन करते हैं तथा बाजार के लिए उत्पादन करने में असमर्थ होते हैं, तब उन्हें 'जीवननिर्वाही कृषक' कहा जाता है तथा आमतौर पर उन्हें कृषक की संज्ञा दी जाती है।

काश्तकार अथवा किसान वे हैं जो परिवार की आवश्यकता से अधिक अतिरिक्त उत्पादन करने में सक्षम होते हैं तथा इस प्रकार वे बाजार से जुड़े होते हैं।

प्रश्न 70. स्वतंत्रता के बाद भारतीय ग्रामीण समाज में आए प्रमुख बदलाव बताइए।

उत्तर- स्वातंत्रयोत्तर काल में भारत के ग्रामीण क्षेत्रों में सामाजिक संबंधों की प्रकृति में अनेक प्रभावशाली रूपांतरण हुए, विशेषत: उन क्षेत्रों में जहाँ हरित क्रांति लागू हुई। ये बदलाव निम्नवत् थे--

1. गहन कृषि के कारण कृषि मजदूरों की बढ़ोतरी।

2. भुगतान में सामान (अनाज) के स्थान पर नगद भुगतान।

3. पारंपरिक बंधनों में शिथिलता अथवा भूस्वामी एवं किसान या कृषि मजदूरों (जिन्हें बँधुआ मजदूर भी कहते हैं।) के मध्य पुश्तैनी संबंधों में कमी होना।

4. 'मुक्त' दिहाड़ी मजदूरों के वर्ग का उदय।

प्रश्न 71. किसानों द्वारा की जा रही आत्महत्या का संबंध कृषिक समस्याओं से है। समझाइए।

उत्तर- देश के विभिन्न भागों में 1997-98 से किसानों द्वारा की जा रही आत्महत्या का संबंध कृषि में संरचनात्मक परिवर्तन व आर्थिक एवं कृषि नीतियों में परिवर्तन से होने वाली कृषिक समस्या से है।

इन कृषिक समस्या में सम्मिलित हैं- भूस्वामित्व के प्रतिमान में परिवर्तन; फसलों के प्रतिमान में परिवर्तन विशेषतः नगदी फसल की ओर झुकाव के कारण; उदारीकरण की नीतियाँ जिन्होंने भारतीय कृषि को भूमंडलीय शक्तियों के सम्मुख कर दिया है; उच्च लागत वाले निवेशों पर अत्यधिक निर्भरता; राज्य का कृषि विस्तार गतिविधियों से बाहर होना तथा बहुराष्ट्रीय बीज तथा खाद कंपनियों द्वारा उनका स्थान लेना; कृषि के लिए राज्य सहयोग में कमी तथा कृषि कार्यों का वैयक्तीकरण।

प्रश्न 72. भारत सरकार द्वारा संचालित तीन कार्यक्रमों के नाम बताइए जो किसानों की आर्थिक स्थिति में सुधार सहायक हैं?

उत्तर- प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना, ग्राम उदय से भारत उदय तथा नेशनल अरबन मिशन (राष्ट्रीय ग्रामीण-नगरीय मिशन) किसानों की आर्थिक स्थिति में सुधार हेतु भारत सरकार द्वारा संचालित किये जा रहे कार्यक्रम हैं। इन कार्यक्रमों ने पूरे देश में किसानों के लिए एकीकृत सहायता के मार्ग खोले हैं। इसके अतिरिक्त इन कार्यक्रमों के द्वारा ग्रामीण लोगों के जीवनयापन में गुणात्मक सुधार हुआ है।

प्रश्न 73. कृषक समाज क्या है? [2020]

उत्तर- रेडफील्ड ने 'कृषक समाज' को परिभाषित करते हुए लिखा है "वे ग्रामीण लोग जो जीवन निर्वाह के लिए अपनी भूमि पर नियंत्रण बनाए रखते हैं और उसे जोतते हैं तथा कृषि जिनके जीवन के परंपरागत तरीके का एक भाग है और जो कुलीन वर्ग या नगरीय लोगों की ओर देखते हैं एवं उनसे प्रभावित होते हैं, जिनके जीवन का ढंग उन्हीं के समान है, लेकिन कुछ अधिक सभ्य प्रकार का।"

प्रश्न 75. कृषक समाज की किन्हीं तीन प्रमुख विशेषताएँ बताइए। [2020]

अथवा

कृषक समाज की प्रमुख विशेषताएँ क्या हैं? [2020]

उत्तर- रॉबर्ट रेडफील्ड के अनुसार कृषक समाज की तीन प्रमुख विशेषताएँ निम्नलिखित है–

1. कृषक समाज के सदस्य अपना जीवन-यापन भमि को जोतकर एवं उस पर नियंत्रण रखकर करत हा

2. कृषक समाज एक अविभेदीकृत एवं अस्तरीकृत समुदाय है।

3. आर्थिक आधार पर कृषक समाज अन्य समाजों से भिन्नता लिए हुए होता है।

प्रश्न 76. ग्रामीण समुदाय की किन्हीं दो मुख्य विशेषताओं का उल्लेख कीजिए। [2020]

उत्तर- ग्रामीण समुदाय की दो मुख्य विशेषताएँ निम्नलिखित हैं–

1. ग्रामीण समुदाय का प्रकृति के साथ प्रत्यक्ष सम्बन्ध होता है तथा इसमें रहने वाले लोगों का मुख्य पेशा

कृषि होता है।

2. ग्रामीण समुदाय का आकार सीमित होता है जिसके कारण जनसंख्या का घनत्व कम होता है और सदस्यों में सामुदायिक भावना पायी जाती है।

प्रश्न 77. हरित क्रांति के किन्हीं तीन प्रमुख प्रभावों का वर्णन कीजिए। [2020]

अथवा

भारतीय ग्रामों पर हरित क्रांति के प्रभाव की विवेचना कीजिए। [2020]

उत्तर- हरित क्रांति के तीन प्रमुख प्रभाव निम्नलिखित हैं–

1. देश में खाद्यान्न उत्पादन तथा खाद्यान्न गहनता में वृद्धि के फलस्वरूप भारत अनाज उत्पादन में आत्मनिर्भर बना।

2. कृषि में नवीन मशीनों; जैसे-ट्रैक्टर, हार्वेस्टर, ट्यबवेल. पंप आदि का प्रयोग किया जाने लगा। इस प्रकार तकनीकी के प्रायेग से कृषि का स्तर बढ़ा तथा कम समय और श्रम में अधिक उत्पादन संभव हुआ।

3. लोगों की आय में वृद्धि होने के फलस्वरूप ग्रामीण समाज में पारम्परिक रूप से चली आ रही प्रथाओं;

जैसे-जजमानी प्रथा, वस्तु-विनिमय आदि समाप्त हुई।

प्रश्न 78. 'अलगाव' से आप क्या समझते हैं?

उत्तर- मार्क्स के अनुसार, वह स्थिति जिसमें लोग अपने कार्य से प्रसन्न नहीं होते, उनकी उत्तरजीविता भी इस बात पर निर्भर करती है कि मशीनें मानवीयं श्रम के लिए कितना स्थान छोड़ती हैं, 'अलगाव कहलाती है।

प्रश्न 79. औद्योगीकरण के कारण सामाजिक असमानताएँ कम हो रही हैं जबकि आर्थिक या आय से संबंधित असमानता बढ़ रही है। समझाइए।

उत्तर- औद्योगीकरण कुछ स्थानों पर जबरदस्त समानता लाता है। उदाहरणार्थ-रेलगाड़ियों, बसों और साइबर कैफे में जातीय भेदभाव का महत्त्व नगण्य होता है। दूसरी ओर, भेदभाव के पुरतेि स्वरूपों को नए कारखानों और कार्यस्थलों में अभी भी देखा जा सकता है। हालाँकि, इस संसार में सामाजिक असमानताए कम हो रही हैं लेकिन आर्थिक या आय से संबंधित असमानताएँ उत्पन्न हो रही हैं। बहुधा सामाजिक और आय संबंधी असमानता परस्पर आच्छादित हो जाती है। उदाहरणार्थ-अच्छे वेतन वाले व्यवसायों: जैसे-मेडिसिन, कानून अथवा पत्रकारिता में उच्च जाति के लोगों का वर्चस्व आज भी बना हुआ है। महिलाएं (अधिकांशतः) समान कार्य के लिए कम वेतन पाती हैं।

प्रश्न 80. संगठित क्षेत्र को परिभाषित कीजिए।

उत्तर- अर्थशास्त्रियों एवं अन्यों में संगठित क्षेत्र को परिभाषित करने में मतभेद हैं। एक परिभाषा के अनुसार, संगठित क्षेत्र की इकाई में 10 और अधिक लोगों के पूरे वर्ष रोजगार में रहने से इस क्षेत्र का गठन होता है। सरकारी तौर पर इनका पंजीकरण होना चाहिए ताकि कर्मचारियों को उपयुक्त वेतन या मजदूरी, पेंशन और अन्य सुविधाएँ मिलना सुनिश्चित हो सके।

प्रश्न 81. असंगठितं श्रमिकों को कितने वर्गों में बाँटा गया है?

उत्तर- श्रम मंत्रालय ने असंगठित श्रमिकों (कर्मकारों) को उनके कार्य, रोजगार के स्वरूप, अति विपदाग्रस्त श्रेणियों और सेवा श्रेणियों के आधार पर चार वर्गों में बाँटा है। यह विवरण निम्न प्रकार है---

1. पेशा-- छोटे और सीमांत किसान, भूमिहीन कृषि श्रमिक, बँटाईदार, मछुआरे, पशुपालन, बीड़ी उद्योग, लेबलिंग और पैकेजिंग के क्षेत्र में कार्यरत कर्मी, भवन और निर्माण में लगे श्रमिक आदि।

2. रोजगार का स्वरूप-- स्व-रोजगार, संबद्ध कृषि श्रमिक, बँधुआ मजदूर, प्रवासी श्रमिक, ठेका और नैमित्तिक श्रमिक।

3. अति विपदाग्रस्त श्रेणियाँ– सिर पर मैला ढोने वाले, सिर पर बोझा ढोने वाले, पशु गाड़ियाँ चलाने वाले, माल ढुलाई के काम में लगे श्रमिक।

4. सेवा श्रेणियाँ– दाइयाँ, घरेलू कामगार, मछुआरे और महिलाएँ, नाई, रेहड़ी पर फल और सब्जियाँ बेचने वाले, अखबार विक्रेता आदि।

प्रश्न 82. अनुबंधित कार्य से आप क्या समझते हैं?

उत्तर- विभिन्न कंपनियों में कुछ कामगार चाहते हैं कि उनका काम उनके बच्चों को दे दिया जाए। कुछ कंपनियों में बदली कामगार भी होते हैं जो कि छुट्टी पर गए हुए मजदूरों के स्थान पर काम करते हैं। अनेक बदली कामगार एक ही कंपनी में बहुत लंबे समय से काम कर रहे होते हैं किंतु उन्हें सबके समान स्थायी पद और सुरक्षा नहीं दी जाती है। इसे संगठित क्षेत्र में अनुबंधित कार्य कहते हैं।

प्रश्न 83. औद्योगीकरण की तीन विशेषताएँ बताइए। [2020]

अथवा

औद्योगीकरण की विशेषताएँ लिखिए। [2020]

उत्तर- औद्योगीकरण की तीन विशेषताएँ निम्नलिखित हैं–

1. यह मानवीय शक्ति की अपेक्षा मशीनी शक्ति पर बल देता है।

2. इसके कारण प्रतिव्यक्ति आय और राष्ट्रीय आय में वृद्धि होती है।

3. यह प्राकृतिक संसाधनों के अधिकतम तथा योजनाबद्ध दोहन पर बल देता है।

प्रश्न 84. भूमिगत खानों में कार्य करने वाले कामगारों को किन परेशानियों का सामना करना पड़ता है?

उत्तर- भूमिगत खानों में कार्य करने वाले कामगार बाढ. आग. ऊपरी सतह के हिस्से के धसने से बहुत खतरनाक स्थितियों का सामना करते हैं। गैसों के उत्सर्जन और ऑक्सीजन के बंद होने के कारण बहुत-से कामगारों को साँस से संबंधित बीमारियों हो जाती हैं। जैसे-क्षय रोग या सिलिकोसिस। खुली खानों में काम करने वाले कामगार तेज धप और वर्षा में काम करते हैं, वे खान के फटने से या किसी चीज के गिरन स लगने वाली चोट का सामना भी करते हैं।

प्रश्न 85. औद्योगीकरण के दो प्रमुख प्रभाव लिखिए। [2020]

उत्तर- औद्योगीकरण के दो प्रमुख प्रभाव निम्नलिखित हैं--

1. आर्थिक आधार पर स्तरीकरण-- औद्योगीकरण के परिणामस्वरूप उत्पादन कार्य बड़ी-बड़ी मशीनों द्वारौ बड़े-बड़े कारखानों व मिलों में किया जाने लगा है। इससे समाज दो भागों में वर्गीकृत हो गया है-पूँजीपति तथा श्रमिक।

2. कुटीर एवोलघु उद्योगों पर प्रभाव-- औद्योगीकरण से कुटीर एवं लघु उद्योग प्रत्यक्ष रूप से प्रभावित हुए हैं। वे लगभग नष्ट हो गए हैं तथा उनसे सम्बन्धित व्यक्ति बेरोजगार हो गए हैं।

प्रश्न 86. सामाजिक आंदोलन किस उद्देश्य से उत्पन्न होते हैं?

उत्तर- सामाजिक आंदोलन में एक सामान्य अभिमुखता अथवा किसी परिवर्तन को लाने (या रोकने) का तरीका होता है। सामाजिक आंदोलन प्रायः किसी जनहित के मामले में परिवर्तन लाने के उद्देश्य से उत्पन्न होते हैं, जैसे कि जनजातीय लोगों के लिए जंगल के उपयोग का अधिकार अथवा विस्थापित लोगो के पुनर्वास तथा क्षतिपूर्ति के अधिकारों को सुनिश्चित करने के लिए।

प्रश्न 87. कार्ल मार्क्स के विचारों से प्रभावित विद्वानों ने सामूहिक हिंसात्मक गतिविधि को किस रूप में प्रस्तुत किया?

उत्तर- कार्ल मार्क्स के विचारों से प्रभावित विद्वानों ने सामूहिक हिंसात्मक गतिविधि का एक भिन्न दृष्टिकोण प्रस्तुत किया। ई०पी० थॉमसन जैसे इतिहासकारों ने दर्शाया कि 'जनसंकुल' तथा 'भीड' समाज को नष्ट करने के लिए अराजक गुंडों द्वारा बनाई हुई नहीं होती। इसके बजाय उनमें भी "नैतिक अर्थव्यवस्था, होती है। दूसरे शब्दों में, उनमें भी उनकी गतिविधियों के विषय में सही और गलत की साझी समझ होती है। उनके शोध ने दर्शाया कि नगरीय क्षेत्रों में गरीब लोगों के पास विरोध करने के लिए उपयुक्त कारण होते हैं। वे प्रायः सार्वजनिक रूप से विरोध करते हैं क्योंकि उनके पास वंचन के विरुद्ध अपना गुस्सा और क्षोभ प्रकट करने का कोई दूसरा तरीका नहीं होता।

प्रश्न 88. 1960 तथा 1970 के दशक के प्रारम्भ में हुए सामाजिक आंदोलनों के बारे में बताइए।

उत्तर- 1960 तथा 1970 के दशक के प्रारम्भ में बहुत-से नए सामाजिक आंदोलन हुए। इस समय संयुक्त राष्ट्र अमेरिका के नेतृत्व में सेनाएँ वियतनाम में भूतपूर्व फ्रांसीसी उपनिवेश में साम्यवादी गुरिल्लाओं के विरुद्ध एक खूनी संघर्ष में संलिप्त थी। यूरोप में पेरिस विद्यार्थियों के जीवंत आंदोलन का केंद्र था जो युद्ध के विरुद्ध हड़तालों की एक श्रृंखला में कामगारों के दलों में सम्मिलित हो गए। अटलांटिक के दूसरी तरफ संयुक्त राष्ट्र अमेरिका सामाजिक विरोध के उदय का अनुभव कर रहा था। मार्टिन लूथर किंग द्वारा चलाए गए आंदोलन के बाद मैलकम द्वारा अश्वेत शक्ति आंदोलन चलाया गया। युद्ध-विरोधी आंदोलन में लाखों विद्यार्थियों ने भाग लिया जिन्हें सरकार द्वारा अनिवार्य रूप से भर्ती कर वियतनाम में लड़ने के लिए भेजा जा रहा था। सामाजिक उथल-पुथल के इस काल में महिलाओं का आंदोलन तथा पर्यावरण आंदोलन को भी बल मिला।

प्रश्न 89. पारिस्थितिकीय आंदोलन का कोई एक उदाहरण बताइए।'

उत्तर- चिपको आंदोलन हिमालय की तलहटी में पारिस्थितिकीय आंदोलन का एक उदाहरण है। यह आंदोलन मिश्रित हितों तथा विचारधाराओं का एक अच्छा उदाहरण है। सन् 1970 में अनपेक्षित भारी वर्ष से लोगों को अत्यंत विनाशकारी बाढ़ का सामना करना पड़ा। गाँववासियों का मामला चमोली जिले में अवस्थित एक सहकारी संगठन दशौली ग्राम स्वराज्य संघ ने उठाया। इन प्रारम्भिक विरोधों के बावजूद सरकार से नवम्बर में जंगलों की वार्षिक नीलामी कर दी। दिए जाने वाले भूखंडों में से एक रेनी जंगल था। ठेकेदार के आदमियों ने, जो जोशीमठ से रेनी जा रहे थे, रेनी से पहले ही बस रुकवाई। गाँव के बाहर से ही जंगल की तरफ जा रहे थे। एक छोटी लडकी. जिसने मजदूरों को उनके उपकरणों के साथ देखा था, भाग कर गाव की महिला मंडल की प्रमुख गौरा देवी के पास गई। गौरा देवी ने दूसरी गृहिणियों को इकट्ठा किया और जंगल जा पहुँची। जब उन्होंने मजदरों से कटाई कार्य प्रारम्भ न करने की याचना की तो प्रारम्भ में उन्हें गालिया तथा धमकियाँ मिलीं। जब महिलाओं ने झुकने से इंकार कर दिया तो पुरुषों को अंतत: चले जाना पड़ा।

प्रश्न 90. एटक क्या है?

उत्तर- एटक का अर्थ ऑल इण्डिया ट्रेड यूनियन कांग्रेस (ए०आई०ई०टी०सी०) है। सन् 1920 में बंबई में इसकी स्थापना हुई। एटक वृहद् आधारों और विभिन्न विचारधाराओं वाला संगठन था। साम्यवादी लोग इसकी मुख्य विचारधारा वाले समूह में थे जिनकी अगुवाई एस०ए० डांगे और एम०एन० राय ने का। नरम दल की अगुआई एम० जोशी और वी०वी० गिरि ने की तथा राष्ट्रवादियों में लाला लाजपत राय आर जवाहरलाल नेहरू जैसे लोग शामिल थे। एटक की स्थापना ने औपनिवेशिक सरकार को

मजदूरो क प्रात व्यवहार में अधिक सतर्क कर दिया। इसने मजदरों को कछ रियायतें देकर असंतोष को सीमित करन का प्रयास किया।